

DPN6735

Title : 1) लिंगार्चन  
2) नित्यकर्म  
3) त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्र  
4) सुधाधारा स्तोत्र

1) LINGĀRCANA  
2) NITYAKARMA  
3) TRIPURA SUNDARĪ STOTRA  
4) SUDHĀDHĀRĪ STOTRA

Run. No. 7460

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual and Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 18 x 7.7

Folios 28

Lines ( in a page ) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS , १११

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : नेगुगु दधुसंदिनताडा मितिसं

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. श्री गुरुपादुकेभ्यो नमः ॥ अथ लिंगार्चनं याय ॥ नो सिम ॥ है आत्मतत्त्वाम स्वाहा ॥

P.T.O.



इति नित्यकर्म समाप्तः ॥ ॥

१. इति श्री त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रं समाप्तः ॥
२. इति श्री महाकाहा सहितायां सुधा धारा स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥
३. इति श्री सोमपुराणे श्री सूर्यस्तोत्रं समाप्तः ॥
४. इति श्री वागवानि स्तोत्र ॥ (नेत्र गृह्यसं दित ताडा मितिसं )



लीगार्चन  
नित्यकर्म  
श्रीपुराणसहितो  
सुधाधारसोत्र.

नमो भगवते वासुदेवाय



15

10

ॐ नमः शिवाय नमः  
 मरुचि वरदाने जिने मायमा मः॥ गुलि ना नि वा ला उ लि ता कि ना  
 म॥ १॥ शिवा रा न मि सा न दा वा ग वा निः॥ जग र्त्ता त्रि सि वि भू स किं  
 र वा नि॥ कृ क ह ग मि पा सः थ (थ स्मा प्र मा यिः॥ थ र्त्ता ल पा फा द  
 का प (र्त्ता ला ०॥ २॥ न गु गु द थू र्त्ता न ता दा मि मि र्त्ताः॥ कृ र्त्ता  
 म र्त्ता मि थू र्त्ता मि र्त्ता॥ थ लि र्त्ता वि प्र ल स्मि र्त्ता र्त्ता द डा वा दा॥ जि  
 ना सि कि वि मा कि पा लि स र्त्ता दा॥ ६॥ ०० मि रा वा ग वा नि स्मा य

ॐ नमः शिवाय नमः  
 मरुचि वरदाने जिने मायमा मः॥ गुलि ना नि वा ला उ लि ता कि ना  
 म॥ १॥ शिवा रा न मि सा न दा वा ग वा निः॥ जग र्त्ता त्रि सि वि भू स किं  
 र वा नि॥ कृ क ह ग मि पा सः थ (थ स्मा प्र मा यिः॥ थ र्त्ता ल पा फा द  
 का प (र्त्ता ला ०॥ २॥ न गु गु द थू र्त्ता न ता दा मि मि र्त्ताः॥ कृ र्त्ता  
 म र्त्ता मि थू र्त्ता मि र्त्ता॥ थ लि र्त्ता वि प्र ल स्मि र्त्ता र्त्ता द डा वा दा॥ जि  
 ना सि कि वि मा कि पा लि स र्त्ता दा॥ ६॥ ०० मि रा वा ग वा नि स्मा य

ॐ नमः शिवाय नमः  
 मरुचि वरदाने जिने मायमा मः॥ गुलि ना नि वा ला उ लि ता कि ना  
 म॥ १॥ शिवा रा न मि सा न दा वा ग वा निः॥ जग र्त्ता त्रि सि वि भू स किं  
 र वा नि॥ कृ क ह ग मि पा सः थ (थ स्मा प्र मा यिः॥ थ र्त्ता ल पा फा द  
 का प (र्त्ता ला ०॥ २॥ न गु गु द थू र्त्ता न ता दा मि मि र्त्ताः॥ कृ र्त्ता  
 म र्त्ता मि थू र्त्ता मि र्त्ता॥ थ लि र्त्ता वि प्र ल स्मि र्त्ता र्त्ता द डा वा दा॥ जि  
 ना सि कि वि मा कि पा लि स र्त्ता दा॥ ६॥ ०० मि रा वा ग वा नि स्मा य

5

ॐ नमः शिवाय नमः॥ अथ लि ग्म द न या या॥ ना सि य॥  
 नै आ ल ग ल्या य स्वा हा॥ नै वि द्या ग ल्या य स्वा हा॥ नै नि व ग ल्या य स्वा हा॥  
 अख लु म लु ला का ल् वा क र्त्ता य न र्त्ता ला य लो ग य द द सि र्त्ता न र्त्ता  
 य द द लि र्त्ता य न र्त्ता म्मा ॐ नमः शिवाय नमः॥ नै अस्मा य रु द् ॥ नै क नि र्त्ता  
 का र्त्ता नमः॥ नै अना मि का र्त्ता नमः॥ नै म र्त्ता मानमः॥ नै ग र्त्ता  
 र्त्ता नमः॥ नै अरु र्त्ता र्त्ता नमः॥ नै क र्त्ता य र्त्ता र्त्ता नमः॥ नै द द  
 यो य नमः॥ नै लि र्त्ता र्त्ता र्त्ता॥ नै लि र्त्ता य र्त्ता र्त्ता॥ नै क र्त्ता य र्त्ता  
 ॥ नै न र्त्ता य र्त्ता र्त्ता॥ नै अस्मा य रु द् ॥ अथा स य र्त्ता॥ म र्त्ता न॥



15

10

सूर्यो॥ नारायण॥ अथात्र॥ मिलुजय॥ ॥ अत्रिभयवियः अत्रि  
 इन्द्रजामका स्थानगय॥ नासिया॥ द्रौ अलनलायस्यारु॥ द्रौ  
 विद्यातलायस्यारु॥ द्रौ निवगलायस्यारु॥ ॥ नैद्रौ श्रीकृष्णैः  
 खलुमलुलाकात्रे वाकजनवलाचने गयददश गऊन  
 नसी॥ श्रीगुरुवनमः॥ गुरुनमस्कार॥ न्यास॥ वनासिन्यास॥  
 ऊर्जयागयज॥ अथेयागयज॥ उतगुडि अलमयज॥ ॥ श्रीसं  
 लोनावाहन॥ ॥ विदवयज॥ नृनासाययादुकी॥ मयूनासा  
 ययादुकी॥ मसासाययादुकी॥ द्वाङ्गुयालाययादुकी॥ श्रीद्रौ

5

कूलयगुवदकनाथाययादुकी॥ गौगौं उं॥ श्रीकृष्णलसना  
 ययादुकी॥ धननवलि॥ आवाहनादि गऊनी दलु गऊमूद्राव  
 लयना॥ ॥ विगुडियज॥ अथउरुलि सानन्दययादुकी॥ य  
 नमउरुय गानन्दययादुकी॥ यनमगिउरु श्रीमिगानन्दयया  
 दुकी॥ ज द्रौ आनन्द लकिरेनवानन्द विनात्रिकयमू॥ गिउ  
 द्विरुहा ॥ श्रीविकाययादुकी॥ धननवलि॥ आवाहक ल द्रौ नम  
 दा॥ ॥ श्रीगुरुमलुलयज॥ न्यास॥ अं अस्मायरुद ॥ क  
 नसाधन॥ श्रीगुरुदायनमः॥ श्रीगऊनेनमः॥ श्रीमधमायन



15  
म॥ श्रीं अनामिकाय नमः॥ उंकनिष्ठकाय नमः॥ अं अस्माय रु  
द॥ कर्तुं न्यास॥ हृदययाय नमः॥ ह्रीं जिह्वामुखाय॥ लीं जिह्वायैव  
षट्॥ नमो कवचाय॥ उं नगुणयाय वषट्॥ अं अस्माय रुद॥ ॥  
ह्रीं जिह्वामुखनयाय दूकी॥ सैं जिह्वामुखनयाय दूकी॥ ललाटयाय दूकी  
॥ मँ वकुमलयाय दूकी॥ लङ्गदयाय दूकी॥ वं नासिकायाय दूकी॥ नैगुण  
याय दूकी॥ यैजानीयाय दूकी॥ उयाय दूकी॥ अं अस्माय सवा  
हयाय दूकी॥ रुं सं न्यासकर्म रुदात्रिकाय दूकी॥ नुवा  
मान्यास॥ आत्मयुज॥ रुं सकूली आनन्ददवयाय दूकी॥ सं रु

5  
ह्रीं आनन्ददवयाय दूकी॥ ह्रीं सम्यक् आनन्ददवयाय दूकी॥ मँ मरुका काला  
नन्ददवयाय दूकी॥ लँ विनायकानन्ददवयाय दूकी॥ वँ स्वस्ति आनन्दद  
वयाय दूकी॥ नँ रुजंगा आनन्ददवयाय दूकी॥ यँ वाला आनन्ददवयाय दूकी  
॥ उं अर्थी आनन्ददवयाय दूकी॥ आसनन॥ यद्वास्तवयाय दूकी॥ नजा  
स्तवयाय दूकी॥ ध्यान॥ नैयद्वासन जवर्क्य दजवर्क्य विलायन॥ स्वव  
र्क्य मरुदीपि॥ सर्वलक्ष्म संयुता॥ स्ववर्क्य पूर्ववर्क्य दक्षिण  
दक्षिण साहिता॥ उरु प्रयागवर्क्य स्यात् रुं दूर्ध्वं न कर्तुं नित्यं॥ न कर्तुं  
दक्षिण पूर्व॥ एतन्मूर्तं न भवयाग दूर्ध्वं यागवर्क्य यागस्यात्क



15

बुद्धिः ॥ प्रकमर्कममिल्याद् सुदुर्द्ध्वगममूलमं अस्त्राद ॥  
 उड्डयवं कव्यं आहलन् विना ॥ खड्गं रुढकं वन्दयन् विष्णुलमङ्क  
 र्गन्त ॥ सुगन्धकमलुर्गुणं ॥ उमन्त्रयदाङ्गमवयवावासीधन  
 ४ सुसंयुक्तं उवसुं वल्लभं ॥ आरुनीचिकुं चकादायासि वन्दय  
 रयल्लुक्तं काद्यविन्दुं वन्दयन् नानालं कालमलुर्गन्तं ॥ सर्व  
 योगं रवदल्लु मासं नसुखसंकिन्तं ॥ नृवं नृयनवात्मानं मलु  
 लं गुन्मलुलं ॥ यद्यम्युयकात्मा दिव्यं सिद्धिं निमानव ॥  
 मल्लम्यनविचिन्तयन् ॥ ॥ गत ४ यजामानं रुन् ॥ रु २ अ

10

संहम ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री कृडिकायेयादकी ॥  
 १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री कृडिकायेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा  
 गुन्मलुलं श्री दयायेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री दाना  
 येयादकी ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री अरुयेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा  
 गुन्मलुलं श्री विद्याययेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री यया  
 ययेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री अययायेयादकी ॥  
 १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री अययायेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा  
 गुन्मलुलं श्री अययायेयादकी ॥ १ नूँडामहायजा गुन्मलुलं श्री अययायेयादकी ॥ १

5







[illegible]

ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ रुद्रायै नमः ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ यद्वासायै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ रुद्रायै नमः ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ यद्वासायै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ रुद्रायै नमः ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ यद्वासायै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ रुद्रायै नमः ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ यद्वासायै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ रुद्रायै नमः ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥  
 ॐ श्रीगुरुयै नमः ॥ यद्वासायै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुयै नमः ॥



साययादकी॥ गजासाययादकी॥ पिनासाययादकी॥ नवनासा  
 ययादकी॥ अथा न अमाधव नद विमल श्रीवृक्षा यसा विचयादकी  
 ॥ अथा न अमाधव नद विमल श्रीमारे स्वना विचयादकी॥ अथा  
 न अमाधव नद विमल श्रीकामा ना विचयादकी॥ अथा न अमा  
 धव नद विमल श्रीवैष्वा विचयादकी॥ अथा न अमाधव न  
 द विमल श्रीवैष्वा विचयादकी॥ अथा न अमाधव नद विम  
 ल श्रीवैष्वा विचयादकी॥ अथा न अमाधव नद विमल  
 श्रीवैष्वा विचयादकी॥ अथा न अमाधव नद विमल श्रीमा

हलक्ष्म विचयादकी॥ धनं वलि॥ ॥ रुगावनिपुञ्जना॥ सि  
 हासाययादकी॥ मरिषासाययादकी॥ ॥ रुसासाययादकी॥ नि  
 ॥ रुसासाययादकी॥ नमः ॥ श्रीक्रोचलुवो ग्राययादकी॥ नमः ॥  
 श्रीक्रोयादकी॥ श्रीवृद्धवल्मुदवायादकी॥ श्रीयवल्मुदवायाद  
 की॥ श्रीवल्मुग्रवल्मुदवायादकी॥ श्रीवल्मुनायिकादवायादकी॥  
 श्रीवल्मुदवायादकी॥ श्रीवल्मुवर्गीदवायादकी॥ श्रीवल्मु  
 यादवायादकी॥ श्रीअतिवल्मुकादवायादकी॥ गियाअलि  
 ॥ नमः ॥ श्रीक्रोचलुवो ग्राययादकी॥ नमः ॥



लामाशसमृत्तुययादुकी॥ धननं वलि॥ ॥ उग्रवशुर्द  
 श॥ सिंहासनाययादुकी॥ महिषासनाययादुकी॥ सुखासनायया  
 दूकी॥ निःसुखासनाययादुकी॥ श्रीसिद्धिनाम॥ सुखायया  
 दूकी॥ धननं वलि॥ ॥ वाताययादुकी॥ यद्रासनायया  
 दूकी॥ लिङ्गाययादुकी॥ कूर्काययादुकी॥ वाताययादुकी॥  
 मर्दनाययादुकी॥ धननं वलि॥ ॥ कर्मयजन  
 ॥ दशासनाययादुकी॥ सिंहासनाययादुकी॥ श्रीरावक्रियनासना  
 सनाययादुकी॥ अद्यानं वज्रं वती श्री॥ रुकाययादुकी॥ वज्र

ग. वलि॥ ॥ विष्णु॥ यद्रासनाययादुकी॥ मूर्त्ति॥ श्रीरुद्रव  
 लुमाहृखलुमनुरव लुविखलुखलुद्विकी॥ ययादुकी  
 ॥ ॥ वतामूलसना॥ अद्यानं वज्रं वती श्री॥ ॥ चन्द्रमधु  
 लाधियनाययादुकी॥ असुरमधुलाधियनाययादुकी॥  
 धनासनाययादुकी॥ अग्निमधुलाधियनाययादुकी॥  
 बुद्धमधुलाधियनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥  
 धियनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥  
 लासनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥  
 अश्विनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥ अश्विनाययादुकी॥



तं। प्रकवकुंतिनप्रकृतेजसासदमधमिर्षा। तमन्ययमधुवाह। स्वप्न  
 मङ्गलप्रदकं। त्रिवेद्यवेद्यवाद्यश्च त्रयदारुयदकिं। त्रिमिखदाम  
 शुलेष्टधनं शुलकयज्जकं। त्रयधकयालेष्टधश्च अरुयाक्यदकि  
 त्वा। पदनविदिगिजानुवाभसस्माचक्यती॥ प्रकवकुंतिनगावत्र  
 प्रसावल्भुवर्त्तिता॥ द्विउजावेनदादकं। सिंरुस्मारुयसयास्मा  
 नानारुजनभाराद्या। मलकलश्चलक्ष्मी॥ रोजवानन्दनया  
 यं। अक्षजयकांतिनी। प्रवक्ष्यामहादव। क्षियसिद्धिमुमा  
 नव॥ त्रिनिश्चानविदिनयन्॥ ॥ अथानवकुंतिज

यादिह्यादि॥ ॥ वनिजाग्रय॥ ॥ रुकानसकान। गिया  
 श्रुलि॥ षष्ठगान॥ धननवलि॥ आवारु। अनु। यानिमूडा  
 ॥ ॥ माहाकाल॥ यगास्त्राययादकी॥ उं। दू। काममाहाकाला  
 ययादकी॥ षष्ठग। वलि॥ ॥ खान॥ सिंरुस्त्राययादकी॥ महि  
 ष। स्त्राययादकी॥ शुक्लास्त्राययादकी॥ निशुक्लास्त्राययाद  
 की॥ क्षुं। श्रीसिद्धि। वाम। शुक्ल। ययादकी॥ षष्ठग। वलि॥ ॥  
 ताला। उं॥ यद्वास्त्राययादकी॥ यथस्मै॥ नाययादकी॥ उं  
 दू। दू। सिंरुदू। उगना। लादवायादकी॥ षष्ठग। वलि॥ ॥











15

10

श्रीकाव्ययूननयि चतुर्ग. गलेनामन्युलन. संस्यतं जननम्.  
 नमथस्तु चतुर्ग. सेनवं श्रीकृष्णस॥ ॥ वदस्योभकवकुलक  
 सानुत. कुरुखननयकयावकनाकुमाला. खलीगखरुह  
 ककायुरुह. दात्रहितं विरुव. लखलववराया॥ ॥ श्री  
 सनवदकनाथ. नियुसिद्ध ४ सुखनाजिनकाश्चन  
 मकष. लमलिसुगलकिमकलितानधनी. यायासूत्रसुव  
 ललालिप्रियाहूनव॥ २ ॥ सिद्धवसाश्चकमना. चिगत्रक  
 कृष्ण. निजिद्वल्लयलयया. वनदहिलया. विरुल्लभ

5

वप्रभा. दकया. गुरुह. यायात्ययंगलयनि. सकलाथ  
 दागा॥ ॥ इकात्रानुत्ययादा. रुसकमनवकुला. वादत्र  
 यागिलिङ्ग. वायुयाद्याजिनाकससिसकलजिना. विरु  
 नाददुङ्गा॥ निजिद्वल्लयलयया. वनदहिलया. विरुल्लभ  
 वामनुम. कि। यायातदवानवासा. सकलरुयह. रु  
 वप्रभाकुङ्गा॥ ॥ वक्रायनाकमलन्युभाभवदनि.  
 माहिलिलिलया। कामापी विरुद्वयनासनकविच  
 कायुषा. वक्रुवा॥ वात्राहायनयात्रययत्रमुखि. न



15

10

दाववजायुआ। चाम्। अगलनाथरेनवगला। नकुमुमाम्  
 नका॥ ॥ मल्लगि। असनका। मयमृदिनमृसी। वजय  
 आसुदिका। वक्रान्याद्यदयगु। स्वत्रदि कयलवे। श्री  
 ययागमदिद्वग। रुकाकाविंसका। वसखसकुकुव  
 कल्लुसुत्रकि। साखाविंसानिरुद। कुमकलनूगता।  
 याउद्याविमवला॥ ॥ रवप्रमामनुसिद्धियुववजवि  
 मन। खगति। जावनवा। सुसुसुसुत्रियुना। अलिवलि  
 नेऊय। सुसुनसर्वविद्या। दोद्योयुदकविलं। निधित्रस

5

गुतिका। यादका। कामसिद्धि। सर्वोत्थनादयनकु अलिवलि  
 विभिर्नं रंनवनानुयुका॥ ॥ स्यामात्रकागिनेगो। सुन  
 रुवनमिता। मरुमागेगममि। विम्बाकाचात्रलगा। यथ  
 नत्रऊयना। भवलात्रलसारु॥ यवालावसुसारुवत्रव  
 नकुसुभ। ववत्रकसरात्र। सामश्राकुडिकोखा। विनत्र  
 उरुवगारुनदिव्यायमाय॥ ॥ माकल्लुयावियदयद  
 नान्नाहायावगान। वक्रयस्ययदुलुनियल्ल। वक्रकि  
 वक्रकल्या। देलाकुदयमृदिनजिन्नका। गगदयरा।



वा॥ सायंदव्यारुवउरुवना. श्रीश्रीवल्लिकाया॥ यादव  
 मयूकेठरुयमथनि. यावलुम. छुदिना. यामाद्यामहिवा  
 सूत्रकयकजायात्रकवायाभया॥ यासांमुनिमुनि  
 दयदलना. यादवदवाभया. सादवाममत्रकदद. लरुज  
 वल्लिजयत्रकउ॥ ॥ उन्. लाम्बूजकलि. कायात्रिगता  
 श्रीसिद्धिलक्ष्म्याना. कयूत्रसू. नि. कदूकून्धवववजा.  
 नि॥ ॥ ययासयहा. संसा. ना. लवदूरवयकेदरुना. निक्क  
 ननसर्वदा. श्रीमल्यक्रमूराम्बूजादभउजा. पुनलिगाया

उव॥ ॥ याभगकानिकू. ना. नि. राखत्रया. सामा  
 कवक्लि. विष. थदलमथसंस्म. विवर्तन. विरु. विषयादि. वि  
 लमरावा. स्वारवा. रावकि. ये. ना. य. लमा. मि. काली॥ ॥ नै. न  
 लव. ना. सन. स्य. ड. व. ना. म. ल. ल. ना. ग. य. रा. सां. कौ. कानि  
 मनू. लो. वा. व. लि. न. म्या. र. व. ना. सर्व. ना. न. या. सा. वि. य. ना. दा. दि  
 दु. नि. वि. वा. सा. ॥ ॥ स. दा. रु. मि. ना. चि. न्या. ड. स. रु. सा. य. द. नि  
 य. नू. द. अ. वि. म. य. वा. द. य. ॥ ॥ मा. या. कू. ल. ल. ना. क्रि. या. म  
 य. म. ना. कालि. क. ला. मा. लि. ना. मा. ना. ग. वि. ज. या. ज. या. रु. ग.



[illegible]



ॐ नमः श्री नैरवाय नमः ॥ ॥ दद्युः कार ॥ श्री संवत्  
म दत्ता त्रैलोक्य यदस्य सीता

१ विरभद्रतत्रोक्तः ॥ ॥ ॐ पूर्वदिशायां ऐला  
तगजारुहो वज्ररुतः सपरिवारो दिग्देवता धीपतीः ईद  
मदलं वंधामि सर्वविघ्नान्नाशयस्व हा ॥ पूर्व ॥ दक्षिः  
णदिशायां महिषारुहो दण्डरुतः सपरिवारो दिग्देव  
ता धीपतीर्यममण्डलं वंधामि स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ॐ पश्चि  
मदिशायां मकरारुहो पाशरुतः सपरिवारो दिग्देवता धी  
पतीर्वरुणमण्डलं वंधामि स्वाहा ॥ पश्चिमे ॥ उत्तरदिशा  
यां पद्मारुहो नकुलरुतः सपरिवारो दिग्देवता धीपती



15  
कुंवेर मंगल वं धामि स्वाहा ॥ उत्तरे ॥ ॐ कालिके विकत  
दंष्ट्रे सर्व विघ्नान् उत्सारय स्वाहा ॥ मथ्य ॥ ॐ नमः ॥

१ ॐ कल्लो किंली फे मा हां माली नमो मां रदौ र दौ स्वाहा ॥ मा  
हां मालिया मंत्र ॥ ॥

१ कं काली जल देवी जल पूरय र ध्वं ध्वं ॥ ॥ ध्यान  
१ कं काली करु नं पाशं विभ्रुतिं जल रूपिनी । विद्युद  
तत्वरूपा मां घोर गज न भीषणां ॥ ॥ वर्त सरु वज्र  
पलै जे कं रूपा मा न वृष्टि कारक ॥ ॥ ॥

१ ॐ वूं वूं वूं वूं फट् स्वाहा मे नमः ॥ ॥ मंत्र  
१ ॐ नमः श्री वासुदाय नमः श्री गिनी नमः श्री नवानी नमः  
धा ७ वासुदा ज्योता वृष जायाय जप याप को स्वाये  
थरो नमी सा ॥ ॥



15

10

5

आदि मां २

श्रीगणेशाय नमः ॥ कणकगौरविराजस्वितचन्द्रमण्डलाननी  
 दशनकुञ्जलसमुज्ज्वलयंकजदललोचनी ॥ अभयशंकु  
 पाशधारिनिरत्रश्चलवासिनी आदिशक्तिविपुसुन्दरिज  
 यजयजयविन्दुवाहिनी ॥ १ ॥ पद्महंसास्वरूपिनी हृदयंकज  
 वासिनी तरुनिश्रुतशरिरउज्जितनारेविन्दुस्वरूपिनी ॥ वल  
 रंदसहस्रकंदुजरीन्दुविन्दुस्वरूपिनी ॥ २ ॥ त्रिविन्दुत्रिलोच  
 नीजयजयजयचक्रवासिनी आदि मां ॥ ३ ॥ नीजविन्दुत्रिको  
 नमण्डलचंदलपरिवेष्टितां ॥ वरेषोदशमाजितागजकरणी

४ मोरी न ४

काविजिह्वजितां ॥ अमित्राचारसुवारवतरसः जयजयज  
 चक्रवासिनी आदि मां ॥ ४ ॥ चिकुरचाचरकेशविगलितमाल  
 तीघनकुण्डलां दिव्यरूपिनिसंभकजितं किंकलियहनु  
 पुरां ॥ सोमलक्ष्मीचक्रहाललोचन जयजयजयशिवहृदात्रा  
 हि मां ॥ ५ ॥ पुष्पराजविराजमानिकहालवेदुजमण्डकीजा  
 तिचंपकमालरंगिनिपालिजातिकमालिकां ॥ नागवेदि  
 सुवेरिकर्पूरजातिकसुरिप्रीफलां शशेविततवदेवमुनिज  
 नजयजयजयसुखलक्ष्मीचक्रवासिनी आदि मां ॥ ६ ॥ शंखचक्रत्रिश  
 जगतमोहिनी आदि मां



15

रडमरुत्वद्वर्षरधारिनी॥ धनुस्त्वगानकुथारमंकुशदानवा  
 सुरक्षोदिनी॥ जगद्युक्तकचश्चमंदितरक्तवस्त्रसुमंदिकां  
 घनघोरघननागगर्जित॥ जयजयजयधुंमलोचनी त्राहिमा  
 ॥ ५ ॥ व्याघ्रसिंहश्रुतीरवर्षतश्चमिरजलस्यलधारिनी॥ लो  
 लालोगसंग्रामसंकटशायदाखंदिनी॥ विसयश्चमिरघोर  
 तिमिरक्षयाचेविनी जयतेजतवरजमुनिजनजयजयजय  
 उत्पतित्राहिमा॥ १ ॥ आदिश्रुतश्रुतादिमव्ययश्चरुनमंड  
 लभोदिनी॥ गगनगंम्यश्चगंम्यगंम्यतिमुन्यमंडलरूपिनी॥

10

5

रक्तकुम्भरगोरगावसुवांदवांथलमुकुमश्चविसमव्ययश्च  
 रुनमंडलभेदिनी॥ जयजयजयजोतिरुपिनी त्राहिमा॥ १  
 सुकगोतमबुलनारदव्याशकौशिकधायतां॥ इन्द्रतेजदि  
 गशोवितंतवचरणाश्चमिके मनवांछिताफलसिद्धिदा  
 यिनीसंपत्तीसुखदायिनी॥ शोवितंहरिहरब्रह्माजयजयज  
 यजुसुखिदायनी त्राहिमा॥ २ ॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरी लो  
 वंशमासः॥ ॥ शुभ॥ \* \* \* \* \*





२६७३॥ या था न ॥ का जा भा मां क ग के त्र वि क ल भ  
य दा मा वि व द्दु न र्वा ॥ ७५ ए व कुं क या न ग्री अ स भा वि  
२६७३ श्री श्री श्री ल

२६७३ श्री श्री श्री ल



२२  
ॐ नमः श्रीगुह्यकालिकादेव्यैः ॥ श्रीमहाकालउवाचः ॥  
अविद्यामिताकांशं शक्तिस्वरूपाः प्रतीच्य त्वधिष्ठनस  
त्तैकमूर्तिः ॥ गुणातीतनिर्द्वन्द्वबोधीकगम्याः त्वमेका  
परब्रह्मरूपेन सिद्धाः ॥ १ ॥ अगोत्राकृतित्वादनेकात्मिका  
दलदमागमत्वादसेषाकरत्वाः ॥ प्रपंचालयत्वादनारं  
भकत्वाः त्वमेका ॥ २ ॥ असाधारनत्वादसम्बन्धकत्वाः  
दमित्राशमत्वादनकारकत्वात् ॥ अविद्यात्मकत्वादन  
शतकत्वाः त्वमेका ॥ ३ ॥ शायदानैवधातानविष्णुर्नरुद्रो

ः त्वकलो न वापंच भूतानि नासः ॥ तदाकारमीभूतसः  
तैकमूर्तिः त्वमेका ॥ ४ ॥ नमीमांसकानैवकादतर्कः न  
स ~~स्व~~ न योगानवेदात्तवेदाः ॥ न देवा विदुस्तु नि  
राकालभावंः त्वमेका ॥ ५ ॥ न ते नाम गोत्रं न ते जन्मः  
मृत्युः न ते धाम या ये न ते दुःख सो खेया न ते मित्र शत्रु  
न ते बन्ध मोक्षौः त्वमेका ॥ ६ ॥ न बालो न च त्ववयवस्थानः  
वृद्धाः न च स्त्री न च पुरुषा नैव च त्वं ॥ न च त्वं सुरो नासुरो  
नारजो वाः त्वमेका ॥ ७ ॥ जले शीतले त्वं सुखो दारुके



15  
10  
त्वं विधौ निर्मलत्वं रवौ तापकत्वं ॥ तवैवाम्बिकेयः  
स्य कस्यापि सक्तीः त्वमेका ॥ ८ ॥ पयो ॥ द्वे इमुग्रं पुराय  
महेसः पुनरांरुह्यं तत्काले जगं च ॥ तवैवैषादा  
न च त्वस्य श ॥ तयाः त्वमेका ॥ ९ ॥ कराला कृती न्या  
न नारी श्रयतीः जयंती कराला दिवा ह्यमित्यं ॥ जगत्याः  
लनाया सुराणां वधायः ॥ त्वमेका ॥ १० ॥ महाचन्द्रयोगेश्वरी  
गुह्यकालीः कराली महादामरीयादहसा ॥ जगत्राशिनी  
चन्द्रकापालिनीयाः त्वमेका ॥ ११ ॥ रवतिशिवाभिर्वहंतीः

5  
कपालं जयती सुरारिं श्रयती प्रस ॥ न तत्तीपतती च  
रती रुसतीः त्वमेका ॥ १२ ॥ अपादापि वाताधिकं धावसिः  
त्वं श्रुतिन्यां विहीनापि सदा ॥ शोषी ॥ अनासापि जीवस्यः  
नेत्रापि पश्यः स जिह्वापि नानारसास्वादविज्ञा ॥ १३ ॥ यथा विम्व  
मेकं रमे रम्य रस्यः प्रतिष्ठापयथा यावदेकोदके ॥ समुः  
द्रासते न करूपं यथावः त्वमेकापि रोकत्रयेत द्वदेव ॥ १४ ॥  
यथा भ्रामयी त्वामदं चक्रमथः कुरालो विधत्ते सरावंधतं  
च ॥ महामोहयंत्रेषु भूतान्यदृष्टः सुरा न्या त्रयास्त्वं ॥ सृज



15  
स्यादिसर्गे ॥ १५ ॥ यथारंगरङ्गकृष्णकल्याः नना रु  
षा ॥ दवीकरा ॥ मू ॥ भुमत्या ॥ जगत्यत्र च तन्मये  
न ॥ दूदेवः त्वमेकैव तत्तन्निवृत्तौ समस्तं ॥ १६ ॥ महाजो  
तिराकारसिंहासरोयतः स्वकीयं सुरावा रुयस्युग्रमुत्तं ॥  
अवष्टत्यपद्मां शिवं भैरवं चः स्थिता ते नमः ॥ न्य भवत्य  
स्वमुख्या ॥ १७ ॥ कयो गासने योगमुद्राभिनीतीः कजोमा  
युयो तस्य बालालगां च ॥ जगन्मातरी दक्षवा पूर्वलीलोः क  
थंकारमस्य ॥ द्विधैर्देविगम्या ॥ १८ ॥ विमुद्रापविन्मयी

5  
स्वप्रकसाः मत्तानन्दरूपा जगद्वापिकाच ॥ तदेदृश्विधाया नि  
राकारमूर्तेः किमस्याभिरत्तर्हदीध्यायितया ॥ १९ ॥ महायो  
रकात्मानरज्ज्वालजालः हितात्यन्तवासा महादादृहासा ॥  
जताभारकालाम्हा मुरमुमालाः विसाम्यत्वमीदृश्याध्या  
यसेवा ॥ २० ॥ तपो नैव कूर्ब्वत्पुः स्वेदयामीः वज्रनापितिर्यप  
देष ॥ अयामी ॥ प ॥ थं नापि वेदं जलजा वयामीः त्वदंघ्रीम  
हं न्यो गते साद्रयामी ॥ २१ ॥ तिरमूर्ब्वतो न्यामरोपासना ॥  
र्चाः परित्यक्तधर्मा धुरस्यापि जंतो ॥ त्वदाराधनन्यस्तवित्त



स्य किमे॥  ॥ करि षं त्यमीधर्मराजस्य दत्ता॥ २२  
॥ नमन्यहुरीने विधातारमीशः न वं किं न चार्के न च द्वादि  
देवो न॥ शिवो दीरिता ने क वाक्य प्रवं धैः त्वदर्क विधि केव  
लं किं तु मन्य॥ २३॥ न वामां विनीद त्तिनी द तु नामः  
त्यज त्यं म्ब वाज्ञातयः स त्यज तु॥ यमीया भताना रके  
पातय तुः त्वमेका गतिर्मे त्वमेका गतिर्मे॥ २४॥ महाका  
लरुद्रादितस्तोत्रमेतत् सदा भक्तिभा वेन यो ध्येती  
भक्तः॥ न चापन्न सोको न रोगो न मृत्युः प्रवेत्ति स्थिरते

व कैवल्यलानः॥ २५॥ इति श्रीमहाकलसहितायां सुधा  
धारास्तोत्रं संपूर्णं॥      ॥      ॥      ॥      ५ सुभा॥



15 श्रीसूर्याय नमः॥ ॥ उग्ररूपं महातेजं महासत्यं महा  
वलं॥ आकाशे प्रतिरिं गाय सूर्याय नमो नमः॥ १॥ रौ  
द्ररूपं त्वया देव पत्यक्षं परमेश्वरं॥ प्रत्यक्षं सूर्या देवा  
य स्यादित्याय नमो नमः॥ २॥ आदित्याय सप्तमो देवं नादित्या  
य नमो ३३ ॥ नादित्याय सप्तमो धर्मं नादित्याय सप्तमो  
पशुं॥ ३॥ जस्य रूपं भवे तेजं वहुरत्र विभूषितं॥ सर्वेश्व  
रं यस्य जलं रेके च कुविमोहति॥ ४॥ हरिदेव त्वया भानु  
हरिदेव महितले॥ हरिदेव सदा सूर्ये सर्वपापप्र

ला  
मुवे ते॥ ५॥ ब्रह्मो वाच॥ वारं यापं कृतं ते न आषाद्येष्टा  
द्यमेव च॥ सर्वपापविनिमुक्तं आदित्यं कृतं संभवेत्॥ ६॥  
जीवनानिरपापानि मोहितं कामसंभवेत्॥ दिवारात्रिनिपा  
यभ्यो आदित्यं उदय पठेत्॥ ७॥ आदित्यादितपो नास्ति ना  
स्ति मे परमपदं॥ हरिदुं कुष्ठं गाय च ज्वलारो जेन विन्द  
ति॥ ८॥ दुश्प्रश्नं विनासाय सूर्यं प्रप्रति बोधयत्॥ धन  
धान्यादिसंप्राप्य॥ कोतितीर्थफलं लभेत्॥ ९॥ यकादका  
दशित हस्त्राणी कन्याकोतिसतेरपि॥ सर्वतिथीभि



15  
षे कंच तत्त धर्म रवि वासरे ॥ १० ॥ ऐहि सूर्जे सहस्राश्रु ॥  
ते जो राखि जगत्पते ॥ अज्ज कंज मा भ क्वा ॥ ११ ॥ अनादि  
वाकरं ॥ ११ ॥ आकासे जा नि चिह्नानि ॥ तानि चिह्नं महि  
तले ॥ पाताल जा नि चिह्नानि ॥ सर्व चिह्नं न मोलते  
॥ १२ ॥ इति श्री सोमपुराणे श्री सूर्य स्तोत्रं समाप्तं ॥

10  
5  
श्री परदेवताय ॥ आ नमः ॥ ऐं नमस्तत्वाय स्वाहा ॥ क्लीं वि  
द्या तत्वाय स्वाहा ॥ सौं सित तत्वाय स्वाहा ॥ न्यास ॥ दक्षि  
ने गनपतये नमः ॥ वा मे गुरुभ्यो नमः ॥ अग्रे श्री स्वस्व देवताय  
नमः ॥ सौं अस्त्राय फट् १० ॥ ऐं १० क्लीं १० सौं १० ॥ सौं अस्त्राय फट्  
१० ॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ सौं मध्यमाभ्यां  
नमः ॥ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॥ क्लीं कनिष्ठीकाभ्यां नमः ॥ सौं क  
रतरपेष्ठाभ्यां नमः ॥ यवद्वयदि ॥ ऐं क्लीं सौं पादुका  
प्रदग ॥ आवाहन ॥ गायत्रि ॥ ऐं त्रिपुरा देवी विद्महे क्लीं



कामेश्वरिधि सहे सौं तं नो त्रिपुर प्र वो दयात् ॥ संख अ  
र्घ्य पूजा ॥ रं अग्नि मंदलाय नमः ॥ हं सूर्य मंदराय ॥ संसा  
म मंदलाय ॥ वं वरुण मंदलाय ॥ षं इंद्राय ॥ आ वाहन ॥ धे  
नुमुद्रा ॥ संपमुद्रा ॥ दर्शयत् ॥ अर्घ्य पात्र पूजा ॥ आत्म पूजा



15

10

5





15

10

5

